A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

रूसा (RUSA) के अंतर्गत संगीत अध्ययन-अध्यापन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं का विश्लेषण : हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में

Sunil Bansal
Ph.D. Research Scholar, Department of Performing Arts, HPU Summer Hill, Shimla

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 15 June, 2026

Bansal, S. (2026). RUSA Ke Antargat Sangeet Adhyan-Adhyapan Ke Sakaratmak Evam Nakaratmak Pahluon Ka Vishleshan: Himachal Pradesh Ke Sandarbh Mein. . Swar Sindhu, 14(1), 338-340.

सार

भारत में उच्च शिक्षा की गुणवत्ता, पहुँच एवं समानता को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से वर्ष 2013 में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (Rashtriya Uchchatar Shiksha Abhiyan-RUSA) की शुरुआत की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य राज्य विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में आधारभूत संरचना, गुणवत्ता सुधार, शैक्षिक प्रशासन, अनुसंधान तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को प्रोत्साहित करना है। हिमाचल प्रदेश ने रूसा को प्रभावी रूप से लागू करते हुए स्नातक स्तर पर Choice Based Credit System (CBCS), सेमेस्टर प्रणाली, सतत् आंतरिक मूल्यांकन तथा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को अपनाया। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में रूसा ने शिक्षण-पद्धति, आधारभूत सुविधाओं तथा गुणवत्ता उन्नयन के नए अवसर प्रदान किए हैं, किन्तु इसके क्रियान्वयन में अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में रूसा के अंतर्गत संगीत अध्ययन-अध्यापन के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का विश्लेषण करता है।

कुंजी शब्द: *रूसा, संगीत शिक्षा, उच्च शिक्षा, हिमाचल प्रदेश, CBCS, गुणवत्ता, आधारभूत संरचना।*

प्रस्तावना

भारतीय संगीत शिक्षा की परम्परा प्राचीन गुरु-शिष्य परंपरा पर आधारित रही है, जिसमें संगीत का शिक्षण अनुभव, साधना और प्रत्यक्ष प्रशिक्षण पर केंद्रित था। आधुनिक उच्च शिक्षा व्यवस्था में संगीत अध्ययन-अध्यापन विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में संगीत शिक्षा को अधिक व्यवस्थित, गुणवत्तापूर्ण एवं रोजगारपरक बनाने की आवश्यकता अनुभव की गई। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA) का उद्देश्य उच्च शिक्षा संस्थानों में गुणवत्ता, पहुँच और समानता को बढ़ाना, संस्थागत सुधारों को प्रोत्साहित करना तथा अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना है।

अध्ययन के उद्देश्य

- हिमाचल प्रदेश में रूसा के अंतर्गत संगीत अध्ययन-अध्यापन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
- संगीत शिक्षा पर रूसा के सकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।
- संगीत अध्ययन-अध्यापन में उत्पन्न नकारात्मक पक्षों एवं चुनौतियों की पहचान करना।
- संगीत शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु पुस्तकों, शोध-पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, रूसा दिशा-निर्देशों,साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी तथा हिमाचल प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के अभिलेखों का उपयोग किया गया है।

रूसा के अंतर्गत संगीत अध्ययन-अध्यापन के सकारात्मक पहलू

1. आधारभूत संरचना का विकास

रूसा के माध्यम से अनेक महाविद्यालयों में स्मार्ट कक्षाएँ, पुस्तकालय, कम्प्यूटर प्रयोगशालाएँ, सेमिनार कक्ष तथा डिजिटल सुविधाओं का विकास हुआ। संगीत विभागों में वाद्ययंत्रों एवं अन्य शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता में वृद्धि हुई।

2. छात्र-केंद्रित शिक्षण व्यवस्था
CBCS एवं क्रेडिट आधारित प्रणाली के कारण विद्यार्थियों को विषय चयन की स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इससे संगीत विषय में अंतर्विषयी अध्ययन की संभावनाएँ बढ़ीं।

3. सतत् मूल्यांकन प्रणाली
आंतरिक मूल्यांकन, प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण एवं व्यावहारिक परीक्षाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की निरंतर प्रगति का मूल्यांकन संभव हुआ।

4. गुणवत्ता संवर्धन
रूसा ने NAAC प्रत्यायन, शैक्षणिक ऑडिट एवं गुणवत्ता मानकों को अपनाने पर बल दिया, जिससे संगीत विभागों की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार की संभावनाएँ बढ़ीं।

5. सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग
डिजिटल सामग्री, ऑनलाइन संसाधनों, ई-पुस्तकालय एवं मल्टीमीडिया आधारित शिक्षण ने संगीत अध्ययन को अधिक प्रभावी बनाया।

6. शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहन
रूसा ने अनुसंधान गतिविधियों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं सेमिनारों को बढ़ावा दिया, जिससे संगीत विषय में अनुसंधान की संभावनाएँ विकसित हुईं।

7. समान अवसर एवं पहुँच
दूरस्थ एवं पर्वतीय क्षेत्रों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करने में रूसा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिमाचल प्रदेश जैसे भौगोलिक दृष्टि से चुनौतीपूर्ण राज्य में इसका विशेष महत्व है।

रूसा के अंतर्गत संगीत अध्ययन-अध्यापन के नकारात्मक पहलू

1. व्यावहारिक विषय की उपेक्षा
संगीत मुख्यतः प्रदर्शन एवं अभ्यास आधारित विषय है। CBCS और सेमेस्टर प्रणाली में समय की सीमाओं के कारण रियाज़ एवं व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्रभावित हुआ।

2. आधारभूत सुविधाओं की असमानता
ग्रामीण एवं दूरस्थ महाविद्यालयों में संगीत विभागों के लिए पर्याप्त वाद्ययंत्र, रिकॉर्डिंग सुविधाएँ तथा ध्वनि प्रयोगशालाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

3. प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी
अनेक महाविद्यालयों में नियमित संगीत शिक्षकों की कमी तथा अतिथि संकाय पर अत्यधिक निर्भरता के कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रभावित होता है।

4. प्रशासनिक कार्यभार में वृद्धि
सतत् मूल्यांकन, परियोजनाएँ, ऑनलाइन डेटा अपलोड एवं अन्य प्रशासनिक प्रक्रियाओं के कारण शिक्षकों का समय शिक्षण एवं शोध से हटकर प्रशासनिक कार्यों में व्यतीत होने लगा।

5. सेमेस्टर प्रणाली की व्यावहारिक कठिनाइयाँ
संगीत शिक्षा में राग, ताल, गायन एवं वादन कौशल विकसित करने हेतु पर्याप्त समय आवश्यक होता है। अल्प अवधि के सेमेस्टर में गहन प्रशिक्षण कठिन हो जाता है।

6. रोजगारपरक पाठ्यक्रमों का अभाव
रूसा ने कौशल विकास पर बल दिया, किन्तु संगीत शिक्षा में संगीत प्रौद्योगिकी, संगीत प्रबंधन, रिकॉर्डिंग, संगीत उद्योग एवं उद्यमिता आधारित पाठ्यक्रमों का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया।

7. लोक संगीत की उपेक्षा

हिमाचल प्रदेश की समृद्ध लोक-संगीत परंपरा को पाठ्यक्रम में अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाया, जिसके कारण स्थानीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में बाधाएँ उत्पन्न हुई हैं।

हिमाचल प्रदेश के संदर्भ में विश्लेषण

हिमाचल प्रदेश में रूसा के अंतर्गत उच्च शिक्षा में अनेक संरचनात्मक सुधार हुए हैं। CBCS, डिजिटल शिक्षा, गुणवत्ता आश्वासन तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण व्यवस्था ने उच्च शिक्षा को नई दिशा प्रदान की है। किन्तु संगीत विषय की प्रकृति अन्य विषयों से भिन्न है। यह केवल सैद्धांतिक अध्ययन नहीं, बल्कि सतत् अभ्यास, व्यक्तिगत मार्गदर्शन एवं सांगीतिक वातावरण की भी अपेक्षा करता है। पर्वतीय क्षेत्रों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता, विशेषज्ञ शिक्षकों की कमी तथा अपर्याप्त आधारभूत सुविधियाँ संगीत अध्ययन-अध्यापन के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

सुझाव

- प्रत्येक महाविद्यालय में सुसज्जित संगीत प्रयोगशाला एवं स्टूडियो स्थापित किए जाएँ।
- नियमित एवं विशेषज्ञ संगीत शिक्षकों की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए।
- हिमाचली लोक संगीत एवं लोक वाद्यों को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान दिया जाए।
- संगीत प्रौद्योगिकी एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रमों को सम्मिलित किया जाए।
- संगीत विषय के लिए सेमेस्टर प्रणाली में व्यावहारिक प्रशिक्षण हेतु अतिरिक्त समय निर्धारित किया जाए।
- ऑनलाइन एवं मिश्रित शिक्षण मॉडल विकसित किए जाएँ।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के कलाकारों के साथ कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

निष्कर्ष

रूसा ने हिमाचल प्रदेश की उच्च शिक्षा व्यवस्था में संरचनात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में भी आधारभूत संरचना, गुणवत्ता सुधार, डिजिटल शिक्षण तथा छात्र-केंद्रित पद्धतियों के रूप में इसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। दूसरी ओर, व्यावहारिक विषय होने के कारण संगीत शिक्षा में समयाभाव, संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की अनुपलब्धता तथा प्रशासनिक जटिलताएँ इसकी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि रूसा के उद्देश्यों को संगीत विषय की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्संरचित किया जाए, जिससे हिमाचल प्रदेश में संगीत शिक्षा अधिक प्रभावी, रोजगारपरक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बन सके।

संदर्भ

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA): दिशा-निर्देश एवं रूपरेखा, नई दिल्ली.
राज्य परियोजना निदेशालय, हिमाचल प्रदेश. RUSA हिमाचल प्रदेश: दृष्टि, मिशन एवं उद्देश्य.
यूजीसी एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय. CBCS एवं उच्च शिक्षा सुधार संबंधी दिशा-निर्देश.
Ministry of Education, Government of India. RUSA Vision Document.